कीचड़

सब तत्परता से अपना परिचय देने लगे—

मुझे रूपकिशोर सक्सेना कहते हैं। कानपुर में वकालत करता हूँ। आप लोगों की मीठी मीठी बातों के लालच में उधर से इधर चला आया। (किसी को इस सफाई की जरूरत न थी गोकि!)

दूसरे साहब ने कहा—जी, मेरा नाम हरबंस सिंह है (नहीं, उनके दाढ़ी नहीं है), दयाराम बतरा की फर्म में जेनरल मैनेजर हूँ, इस वक्त कलकत्ते जा रहा हूँ, बीस लाख के कैपिटल से एक नया धंधा शुरू करने।

तीसरे साहब ने कहा—अजी, मुझे पुरुषोत्तमदास खत्री कहते हैं, यहीं दिल्ली में मेरी एक छोटी-सी दूकान है, कनाट प्लेस में; जुवेलरी की।

चौथे साहब ने कहा—मैं रमन हूँ, एस० एस० रमन। (नहीं आप सी० वी० रमन से उनका रिश्ता जोड़ने की कोशिश न करें, एक तो वह गलत है, दूसरे रूपकिशोर साहब पहले ही ऐसा कर चुके हैं...मगर इसका यह मतलब नहीं है कि रूपकिशोर साहब सब काम गलत ही करते हैं या कोई काम गलत सिर्फ इसलिए है कि रूपकिशोर साहब उसे करते हैं!) न मैं दिल्ली रहता हूँ न कलकत्ता, यानी मैं दिल्ली में भी रहता हूँ और कल-

कत्ते में भी। मैं दिल्ली में होटल में जिन्दगी काट रहा हूँ ; (साहब, निरू-लाज़ बड़ा सूरतहराम होटल है। क्यों भई हरबंस, वह रोज़ बैंगन क्यों बनाता है ? अब आजकल तो मटर और टमाटर के दिन हैं। हरबंस ने उनकी बात की तसदीक़ करते हुए कहा—मैं भी रोज टमाटर लाने के लिए कहता हूँ मगर वह कह देता है कि अभी बाजार में आये नहीं। रमन साहब ने लाल-पीले पड़ते हुए कहा—किस बाजार में जाता है साला ! मुझे तो आजकल दिल्ली में सिवाय टमाटर के और कुछ नजर ही नहीं आता।...And then he charges you three hundred rupees a month...Swine !) मेरे बीवी-बच्चे कलकत्ते में हैं। मैंने अपने बॉस से साफ कह दिया है कि मुझे महीने में पंद्रह दिन की छुट्टी अपने बीवी-बच्चों के पास रहने के लिए चाहिए, अगर नहीं दे सकते तो यह रहा मेरा इस्तीफा !

एक मनहूस थकान और कानिस्टिबिल के चेहरे जैसी खवासत-भरा गेहुँअन चेहरा जिस पर ताज़गी या अक़्ल की रौशनी नाम को नहीं है, जो लकड़ी के एक पटरे की तरह सख्त और बेजान है। गेहुँअन, क्लीनशेव्ड चेहरे पर चेचक के दाग, सीतला के, जो गड्ढों की तरह नजर आते हैं। (अजब बात है कि चेचक के दाग काले चेहरे से भी ज्यादा बुरे गोरे चेहरे पर नजर आते हैं !) पकौड़ी की तरह नाक। मोटे मोटे ओंठ, पान से रचे हुए—बिलकुल गैरमामूली ओंठ। जहाँ औरों के एक धड़कता हुआ दिल होता है, वहाँ इसके थलथल गोश्त का एक टुकड़ा है, जैसे एक बड़ा-सा गोबरैला। उसके मुँह से सौंफ की गन्ध आ रही है। उसने बहुत-सी सौंफ खा रक्खी है जिसमें उसके मुँह से उड़नेवाली मटके भर कच्ची शराब की बदबू दब जाय (नहीं नहीं, कहानी में कोई गलती नहीं है। यह न समझिए कि कोई सेकंड क्लास में चलता है तो वह जॅान एक्सशॉ या

व्हाइट हॉर्स ही पीता है !) मगर नतीजा कुछ और ही होता है, दोनों के संयोग से एक तीसरी बदबू पैदा होती है जो शराब की बदबू से भी ज्यादा बदबूदार है।

× × ×

'रूपकिशोर सक्सेना। कानपुर में वकालत करता हूँ।' इतने से पता नहीं आपकी आँखों के सामने कोई तसवीर खिंचती है या नहीं; मैं तो इतने परिचय से एक लाख आदमियों में से कानपुर के वकील रूपकिशोर सक्सेना को ढूँढ़ निकालूँ। उस रोज टूँडले से कानपुर तक तूफान में मेरा उनका साथ हो गया यह बात अलग है। इसके बिना भी मैं उनको पहचानता था, इसीलिए जब उन्होंने अपना परिचय दिया तो मुझे उसमें कोई नयापन नहीं मालूम हुआ, जैसे मैं बीसियों बरस से जानता होऊँ कि यही रूपकिशोर सक्सेना वकील हैं, जैसे उनका और कोई नाम मुमकिन ही न हो, जैसे वे रूपकिशोर सक्सेना छोड़ और कुछ नहीं हो सकते या जैसे अगर यह आदमी रूपकिशोर सक्सेना नहीं तो फिर दूसरा कौन हो सकता है !

कानपुर के वकील रूपकिशोर सक्सेना के सर पर ऊनी गांधी टोपी है। ऊपर धड़ पर साढ़े तीन या चार वर्ग इञ्च के चारखाने का कोट है, नीचे धड़ पर मोटे केचुए के बराबर मोटी धारियों का ढीलमढाल पतलून है। जैसे एक छिपकिली पतलून पहन कर चलने लगी हो, खड़े हो कर, सीधे !

बाकी लोगों के बारे में कोई खास बात कहने को नहीं है सिवाय इसके कि सबके सफाचट चेहरे संगमर्मर की तरह चिकने और सपाट नजर आ रहे हैं।

इन लोगों के बारे में कोई बुरी बात नहीं कही जा सकती। ये समाज के सभ्य से सभ्य, संभ्रान्त से संभ्रान्त नागरिक हैं। बेहतरीन कपड़े पहनते

हैं (कुछ को इसकी तमीज़ नहीं भी होती !) हमेशा लकदक सूट में नजर आते हैं, सिगार और सिगरेट का शौक करते हैं (मिस्टर रमन को देखिए न बर्मा के चुरुटों का बकस साथ में रखते हैं), छोटी हाज़िरी और बड़ी हाज़िरी खाते हैं, अपने अपने घरों में आज के जमाने में भी अच्छा आमिष और निरामिष खाना खाते हैं, सेकंड क्लास में सफर करते हैं, अपनी बीवियों को रंगीन रंगीन रेशमी और ऊनी कपड़े पहनाकर और खुशनुमा (चाहे नकली !) हीरे-जवाहरात से सँवारकर उन्हें संग में लिये कनाट सर्कस या हजरतगंज या चौरंगी या कोलाबा में घूमते हैं, राजनीति और समाजनीति की लंबी-चौड़ी व्याख्याएँ करते हैं, दिलोजान से कम्युनिस्टों से नफरत करते हैं, मजदूरों को हिकारत की नजर से देखते हैं, राह चलते भी उनसे अपना दामन बचाते रहते हैं। यानी हर तरह से वे समाज के भद्र लोग हैं। आप किसी बात के लिए उन पर उँगली नहीं उठा सकते। बलात्कार और रक्तपात और हिंसा की बात सुनकर, वे कहते हैं, उन्हें बड़ी तकलीफ होती है। (कुछ को ग़श तक आ जाता है !) वे ऐसा एक भी (अच्छा या बुरा) काम नहीं करते जो समाज के प्रचलित मानदंडों के खिलाफ जाता हो।

यह बात बिलकुल अलग है कि छिपे छिपे वे अपनी बीवियों को सताते हैं, दूसरों की बीवियों को लिप्सा की आँखों से देखते हैं (यहाँ तक कि कभी कभी अपने पुरुषार्थ से.....!) आपस में गंदे गंदे मज़ाक़ करते हैं जिन्हें सुनकर शायद इक्केवाले भी कान में उँगली दे देंगे, अपने ही जैसे लोगों के दरमियान जो बिला हिचक अपने अंदर के सड़ते हुए कीचड़ को फ़ख्र के साथ बाहर लाते हैं, मगर यों सदा ओंठ सिये रहते हैं काम की बात के अलावा एक लफ़्ज़ भी ज़बान से नहीं निकालते, पब्लिक में वैसी कोई बात अगर सुनायी पड़ जाय तो जुगुप्सा से ऐसा तीन कोने का मुँह बनायेंगे गोया वैसी किसी बात की छाया से भी वे मीलों दूर हैं, मगर वे ही महापुरुष जब अपने दिलों के दरवाजे खोलते हैं तो अन्दर की तमाम

ग़लाज़त और सड़ांद बंद हवा की तरह बेतहाशा बाहर की तरफ भागती है—

जिस समय इस नाटक का पर्दा उठा, बाबू रूपकिशोर सक्सेना (कानपुर के वकील) सबसे अलग-थलग बैठे थे; मगर इधर रमन, हरबंससिंह और पुरुषोत्तमदास खत्री में ऐसी लुभावनी बातचीत चल रही थी कि बाबू रूपकिशोर को अपनी जगह छोड़ कर इन लोगों के पास आना ही पड़ा। शराब का लती आदमी जिस तरह कलवरिया की तरफ से गुजरने पर उसके भीतर घुस जाने की कोशिश शिद्दत से महसूस करता है, उसी तरह रूपकिशोर के लिए यह बातचीत थी।

यों बातचीत कुछ खास न थी। वे तीनों पहले के परिचित थे, एक ही होटल में रहते थे, वही सब बातें आपस में कर रहे थे—खाने की शिकायत और ऐसे एक दोस्त का ज़िक्र जो बड़ा यारबाश था, बड़ा नेक था, दोस्ती निभाना जिसे आता था, अपने से बन पड़ने वाली किसी मदद में जो कभी कंजूसी नहीं करता था, मगर जिसमें एक यही ऐब था कि वह औरतों का बुरी तरह शैदाई था। हरबंस के शब्दों में 'विमेन आर हिज़ वीकनेस'। उसे रुपए का मोह नहीं इसलिए घूस से उसे सरोकार नहीं मगर कोई खूबसूरत औरत अगर दिख गयी तो फिर वह उसके पीछे जरूर भागेगा, उसी तरह जैसे कोई खूबसूरत चिड़िया दिख जाने पर बहेलिया कंपे में लासा लगाकर उसके पीछे पीछे इस पेड़ से उस पेड़ भागा भागा फिरता है या जैसे चीतल दिख जाने पर असली शिकारी कांधे पर बन्दूक रखे पूरे जंगल की खाक छानता फिरता है। हरबंस के उन दोस्त के रक्त में जैसे यही शिकारी की मनोवृत्ति हो जो शिकार देखते ही जग जाती हो...

...और हर सुन्दर स्त्री उनके लिए शिकार थी जिसके पीछे वह न भागें ऐसा नहीं हो सकता था, भागना उन्हें पड़ता ही था क्योंकि यही उनके मन के दिगन्तव्यापी निबिड़ जंगल की पुकार थी।

उन्हीं के किस्से हरबंस रस ले लेकर सुना और बाकी लोग सुन रहे थे, कैसे एक बार हरबंस ऐसे वक्त, चपरासी के रोकने पर भी उनके दफ्तर में घुस गया जब कि वह साहब अपनी ऐंग्लो-इंडियन स्टेनो के संग...

सब आत्यन्तिक उल्लास से खी खी खी खी हँस रहे थे : उन्हें इसमें अपनी नग्न वासना का प्रतिफलन दिखाई दे रहा था। बिना वैसी वीभत्स स्थिति में पड़े वे उसका सुख भी लेना चाहते थे और साथ ही अन्दर अन्दर अपने को सर्वथा पूत समझने के अहंकार को भी तिल भर न छोड़ना चाहते थे। इस समय उन्हें लग रहा था कि ये दोनों बातें सम्भव हैं। कभी रमन और कभी खत्री हरबंस को खोद खोदकर उस घटना की तफसील सुनाने को कह रहे थे और हरबंस भी औदर दानी की तरह न केवल उन्हें उस घटना की एक से एक रसभरी तफसीलें सुना रहा था बल्कि उन हजरत के नए नए किस्से सुना रहा था!

बड़ी देर से यह संभोगक्रीड़ा चल रही थी। पहले तो बाबू रूपकिशोर ने बिना बुलाए इन लोगों के पास न आकर अपनी कुलीनता की रक्षा करनी चाही, किन्तु आखिरकार एक क्षण ऐसा आया जब वे इस सरस वार्त्ता में हिस्सा लेने से अपने को और न रोक सके!

ऐंग्लो इंडियन स्टेनो और हरबंस के उन दोस्त के किस्से से बाबू रूपकिशोर को ऐसे एक युवा मिल मालिक की याद आ गई जिसका पुरुष स्टेनो से एक दिन काम न चलता था और जो लगभग हर महीने पुरानी लड़की को छुट्टी देकर इन्टव्यू के लिए नई नई लड़कियों को अपने दफ्तर में बुलाता था।

सभी श्रोताओं की अंतश्चेतना से एक हूक निकली : काश कि हम भी ऐसा ही कर सकते!

खत्री ने पूछा—तो खूब चलता होगा टाइपिंग का काम!

रूपकिशोर ने खत्री की बात का लाक्षणिक अर्थ पकड़ते हुए कहा—हाँ, दिन भर में एक चिट्ठी होती है। पूरा पूरा दिन यही तय करने में

चला जाता है कि 'वी बेग टु ऐकनॉलेज रेसीट आफ़ योर लेटर डेटेड...' लिखा जाय या 'योर लेटर डेटेड—वाज़ ड्यूली रिसीव्ड.....' !

फिर हरबंस के ही चरण-चिन्हों पर चलते हुए रूपकिशोर ने एक दिन का वाक़या खूब रस ले लेकर इशारों के साथ सुनाया जब एक रोज़ वे उन नौजवान मिलमालिक के दफ्तर में ऐसे वक्त चले गए (कंपनी के कानूनी सलाहकार की हैसियत से उन्हें कहीं आने जाने से कोई रोक तो सकता नहीं!) जब वे एक बड़ा जरूरी खत स्टेनो के पास बैठे 'डिक्टेट' करा रहे थे!

उनके इस लतीफे का लोगों ने जोरदार स्वागत किया। वही खोखली हँसी और खोद-खोद कर बारीकियों का पता लगानेवाले सवाल जो किस्सा कहनेवाले को गंदगी के कीचड़ में और गहरे उतरने के लिए शह दें।

बाबू रूपकिशोर की इस कहानी को लोगों ने इतना पसंद किया कि उन्होंने प्रोत्साहित होकर अपनी कहानियों की जैसे बाढ़ सी लगा दी—मगर आपको उन कहानियों से वंचित ही रहना पड़ेगा क्योंकि अभी तक हिंदुस्तान में लुच्चों और गिरहकटों और रंडियों के दलालों की हुकूमत नहीं कायम हुई है!

कब यह बातचीत अनायास पंजाब के दंगों पर चली गई, किसी को जैसे पता ही न चला। अब लड़कियाँ भगाने और बलात्कार आदि की कहानियों का दौर चल रहा था। यह प्रसंग ऐसा सरस है कि चाहे उसका दंगे से संबंध हो या न हो श्रोता को उसमें आनंद तो आता ही है। दंगे ने तो सिर्फ इतना किया कि इस मज़े को कई हजार से गुणा कर दिया। पहले कहाँ दो चार लड़कियाँ उड़ाई-भगाई जाती थीं और कहाँ दो चार बलात्कार के मामले होते थे, अब लाख डेढ़ लाख लड़कियाँ भगाई गई थीं और

बलात्कार के मामले तो इतने हुए कि गिनती करना मुशकिल हो गया। पहले कहाँ ज्यादातर मुसलमान गुंडे ही इस कारोबार में हातिम रहते थे, अबकी हिन्दुओं और सिखों ने भी बढ़ बढ़ कर हाथ मारे थे और एलानिया साबित कर दिया था कि मुसलमानों, तुम यह न समझना कि हम तुमसे घटकर हैं, हम तुमसे भी बड़े गुंडे हैं!

लाखों मरने थे मर गए, लाखों बच्चे यतीम होने थे हो गए, लाखों औरतों का सतीत्व नष्ट होना था हो गया। अब तो सिर्फ उनकी कहानियाँ रह गई हैं जिन्हें लोग चटखारे ले लेकर सुन-सुना रहे हैं।

अचानक जैसे बाबू रूपकिशोर ने सबके सिर पर ईंट दे मारी—आपको मुसलमान का भरोसा है?

हरबंस ने कहा—आजकल वह लोग गांधी जी और पण्डित नेहरू में भक्ति तो बहुत दिखलाते हैं, करीब करीब रोज ही किसी न किसी का बयान रहता है।

रूपकिशोर ने जैसे इस चीज का मखौल उड़ाते हुए कहा—अजी उन बयानों की भी आपने भली चलाई। वह तो मरता क्या न करता वाली बात है।

हरबंस ने बहुत हलका सा विरोध करते हुए कहा—मगर तो भी....

रूपकिशोर ने कूटनीतिज्ञ की सी हँसी हँसते हुए कहा—नहीं भाई, वह बात मेरे गले से नीचे नहीं उतरती।

और फिर बहुत जोर के साथ जैसे अपनी बात पर वजन देते हुए कहा—मुझे तो इसमें शक ही नहीं नजर आता कि मुसलमान कभी हिन्दुस्तान के प्रति सच्चा हो नहीं सकता—

पुरुषोत्तम दास खत्री ने जो खामोशी के साथ हवा का रुख पहचानते हुए बैठे थे, कहा—तो मारे जाएँगे साले!...आपको मालूम है दिल्ली में हमने क्या किया है?

सब लोग जैसे मुँह खोलकर खत्री की घोषणा का इन्तजार करने लगे। खत्री भी अपनी बात का असर और भी गहरे उतारने के खयाल से कोई तीस सेकंड के लिए खामोश रहे, फिर इन्द्र के-से गुरुगंभीर स्वर में अंतरिक्ष को जैसे एक पर्वताकार नगाड़े से निनादित करते हुए बोले—दिल्ली में अब मुसलमान की शकल नहीं दिखाई देती और अगर कहीं दिखाई देती है तो वहीं जामा मसजिद के आसपास जहाँ वह अपने दड़बे में घुसा बैठा रहता है, चेहरे पर झाड़ू-सी फिरी हुई.....

इतना कहकर खत्री फिर कुशल वक्ता के समान चुप हो गये। तीस सेकंड के अन्तराय पर मन्त्रमुग्ध श्रोताओं, मुख्यतः बाबू रूपकिशोर, को पूरी तरह अपने हाथ में करते हुए बोले—सिख को देखकर तो अब मुसलमान की बोटी काँपती है।

हरबंस सिंह ने इसको अपनी प्रच्छन्न प्रशंसा के रूप में ग्रहण किया और भीतर ही भीतर फूलकर कुप्पा होते हुए कहा—सच पूछिए तो पूरबी पंजाब में भी कुछ कम नहीं हुआ है। अखबार में आने नहीं दिया हम लोगों ने। लोगों का खयाल है कि तीन और दो का रेशियो (अनुपात) होगा—

बाबू रूपकिशोर ने इस भाषा को न समझते हुए पूछा—क्या मतलब?

अब तो खत्री को इस बात का पूरा यकीन हो गया कि रूपकिशोर सख्त गावदुम आदमी है, उसे पता ही नहीं कि दुनिया कहाँ की कहाँ पहुँच गई शायद यह अब भी उसी पुराने ख्याल में पड़ा हुआ है कि मुसलमान बड़ा मारतेखाँ होता है और हिन्दू निरा पिट्टनचंद। अजी वह जमाने लद गए। अब तो मुसलमानों को लेने के देने पड़ते हैं।

तभी हरबंस ने कहा—तीन मुसलमान और दो हिन्दू।

बाबू रूपकिशोर ने आश्चर्य से कहा—अच्छा ऽऽऽ....और विस्फारित नेत्रों से इन देवदूतों को निहारा जिन्होंने यह सुख-संवाद उसे सुनाया। उसे अपने भीतर स्वर्गिक सुख और शान्ति का पारावार उमड़ता-सा प्रतीत

हुआ। करीब था कि अज़हद खुशी के मारे उसे फिट आ जाता, मगर उसने अपने को काबू में कर लिया और प्रकृतिस्थ से स्वर में मगर जैसे विश्वास न करते हुए (इतनी बड़ी बात थी यह, कोई इस पर सहसा विश्वास कर भी कैसे लेता !) कहा : इट इज़ टू गुड टु बी ट्रू,† तो क्या मैं सचमुच यह समझूँ कि पंजाब में ज्यादा मुसट्टे ही मारे गए हैं !

भावावेश के कारण रूपकिशोर का स्वर धीमा और कुछ भरा-सा गया था।

खत्री ने कहा—इसमें ताज्जुब की बात ही क्या है ? हिन्दू भी अब किसी से किसी मामले में उन्नीस नहीं हैं बीस भले ही हों। मैं तो बस दिल्ली की बात जानता हूँ। जिस दिल्ली में उनके पुरखों ने आठ सौ साल तक राज किया, उसी दिल्ली में आज उनकी क्या गत बना दी गई है, कभी दिल्ली आइए तो दिखलाऊँ।

इन समाचारों ने बाबू रूपकिशोर की वाणी छीन ली थी। उनके भीतर इस वक्त खुशी के मारे ऐसी हलचल मची हुई थी कि उन्हें लग रहा था मानों उनके दिल की धड़कन बढ़ गई हो।

तब बाबू रूपकिशोर ने एक विचक्षण इतिहासकार की-सी भंगिमा में कहा—तब तो इसका मतलब है कि अगर गांधीजी ने दिल्ली पहुँचकर रोक-थाम न की होती तो—

हरबंस—एक साला मुसल्ला बचकर न जाता, सबकी यहीं कब्र बना दी जाती। और वह मुसकराया।

खत्री ने प्रतिवाद सा करते हुए कहा—मगर कांग्रेस और गाँधीजी को दुनिया पर भी तो नजर रखनी पड़ती है। गाँधी जी और पंडित जवाहर लाल हमसे आपसे ज्यादा अक्लमंद हैं। हम-आप तो महज एक बात देखते हैं, उन्हें इस बात की भी तो फिक्र है कि दुनिया में हिन्दुस्तान की बदनामी न हो—

---

† भई, यक़ीन नहीं होता !

इस पर रूपकिशोर ने नाटकीय ढंग से क्रोध का प्रदर्शन करते हुए कहा—उन्हें जितनी फिक्र हिन्दुस्तान की बदनामी की है उतनी ही अगर इस बात की होती कि उन म्लेच्छों ने हमारी बहू-बेटियों के संग क्या क्या करम किये हैं.....

खत्री ने कहा—यह न समझिए कि उन्हें इस बात की फिक्र नहीं है.... इण्डियन यूनियन, गौर से देखिए तो इस मामले में भी पाकिस्तान से पीछे नहीं है, फर्क बस इतना है कि यहाँ पर सब काम डिप्लोमैटिक (कूटनीतिक) ढंग से होता है, साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे !

यह कहकर खत्री ने उपस्थित सभी लोगों को लक्ष्य करके हलके से आँख मारी।

...और तत्काल सबने उनकी बातों को हृदयंगम कर लिया। गांधी जी और पंडित नेहरू के शान्ति-अभियान का रहस्य भी अब इन दूरदर्शी ऋषियों की समझ में आ गया था !

रूपकिशोर को अब अगर हैरानी किसी बात की थी तो यह कि इतनी मोटी सी बात उनकी समझ में क्यों नहीं आई थी !

इधर हरबंस अपने घाव पर मलहम लगा रहा था। रूपकिशोर की बात से उसे बड़ी चोट लगी थी। उसको बराबर यही लग रहा था कि मुसलमानों द्वारा हिन्दू और सिख बहू-बेटियों के सतीत्व-भंग की बात जैसे स्वयं उसको, हरबंस को, लजवाने के लिए कही गयी है—

छिः, लानत है तुम पर और तुम्हारी मर्दुमी पर, बड़े सिख बनते हो, मुसलमानों ने तुम्हारी बहू बेटियों के संग क्या क्या कर डाला और तुमसे कुछ करते-धरते न बना ! छी-छी तुम भी कोई आदमी हो !

आखिरकार हरबंस ने जैसे शिकायत के लहजे में कह ही तो दिया—करने को हमने भी कुछ कम नहीं किया मिस्टर रूपकिशोर, उसकी पब्लिसेटी न हो यह और बात है !

फिर हरबंस ने बहुत धीमी आवाज में, फुसफुसाते हुए, पूरबी पंजाब की उड़ाई हुई मुसलमान लड़कियों के एक से एक मदभरे किस्से सुनाने शुरू किये.....कैसे उन्हें उड़ाया गया, कैसे उन्हें पंद्रह-पंद्रह बीस-बीस की तादाद में एक एक मकान में रखा गया, कैसे कुछ दिनों के लिए वहाँ सैकड़ों चकले आबाद हो गए, कैसी कैसी हसीन और कमसिन छोकरियाँ उनमें थीं, कैसे हिन्दुओं और सिखों के गिरोह उन पर टूटते थे, कैसे उनमें से कुछ जो बग़ावत करने की कोशिश करती थीं उनके सर धड़ से अलग कर दिये जाते थे, और कैसे आगे-पीछे उन्हें भी जहन्नुम रसीद किया जाता था जो अपनी जवानी के पूरे उभार के साथ खामोशी से....

किस्सा कहने वाले और सुननेवाले, सबकी आँखें एक अजब वहशियाना रोशनी से चमक रही थीं !

सुना है अगले साल से कलकत्ते के ज़ू में एक नया जानवर आनेवाला है। उसके रूपरंग के बारे में अभी कोई तफसील किसी अखबार में नहीं निकली है, मगर मुझे लगता है कि मैंने उस जानवर को ज़रूर कहीं देखा है